बहे सत्संग का दरिया

बहे सत्संग का दरिया,
नहा लो जिस का जी चाहे,
करो हिमत लगा डुबकी,
नहा लो जितना जी चाहे,
बहे सत्संग का दरिया

हज़ारो रतन है इसमें इक से इक बड़याला,
नहीं कोई दर बीमारी का लगा लो जितना जी चाहे,
बहे सत्संग का दरिया.....

खजाना वो मिले इसमें नहीं मुंकिन ज़माने में,
किसी का डर नहीं कुछ भी उठा लो जितना जी चाहे,
बहे सत्संग का दरिया...

मिटे संसार का चकर लगे नहीं मौत की टकर,
करे है भव सागर करा लो जिसका जी चाहे,
बहे सत्संग का दरिया.....

बना दे चोर से साधु मिटावे दुष्ट मन की,
कटे जड़ मूल पापो का कटा लो जिसका जी चाहे,
बहे सत्संग का दरिया

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/8242/title/bahe-satsang-ka-dariya-nha-lo-jis-ka-jee-chahe-

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |